धर्म जीवन

अक्तूबर 2006

- पाठकों के विचार
- केवल उपकार देख लेना शुक्रगुजारी नहीं
- मैं अमृत लोक का राही बन गया हूँ
- श्रीमान हरमिन्द्र सिंह जी चहल
- परलोक सत्य है
- परलोक वासी कैप्टन की आत्मा का रहस्य
- अध्यापक का दर्जा
- हम खुश कैसे रह सकते हैं?

पाठकों के विचार

एक सेवक विदेश से लिखते हैं :-

यहां पर सत्संग तथा सत्य देव की जय सुनने को कान तरस जाते हैं। सन्मान के योग्य खेड़ा साहिब के एक भाई साहिब हैं जो कि 87 साल के हैं तथा उनकी धर्म पत्नी 80 साल की हो गई हैं। उन के तीनों बेटे यहां अपना काम करते हैं। मेरे से अच्छा सम्बन्ध रखते हैं हम आपस में सत्य देव की जय करते हैं तो मुझे असीम खुशी होती है उन्हें हिन्दी के अपने धर्म जीवन तथा दूसरें अखबार पढ़ने को देता रहता हूँ। वह माननीय सरला जीवन बल जी से भी बहुत प्रभावित हैं उनके पिता जी तो ब्रह्म समाजी थे परन्तु देव समाज का उन पर बहुत अच्छा प्रभाव है।

अगस्त सितम्बर के हित स्त्रोत के सारे लेख बहुत प्रभावशाली थे आप कितनी साधना तपस्या करके इन्हें हमारे लिए लिखते हैं। आत्मिक बेसुधी तथा आत्म बोधी होने की कुछ पूँजी पढ़कर अपनी कृपा पात्र अवस्था पर रोना आता है कि हाय भारत में देव गंगा का दर छोड़ कर अपना आप कंगाल लगता है। बुरा हो हालात का यदि समाज के हालात ठीक ठाक होते तो में इधर Set होने की गल्ती कभी ना करता। अब तो ऐसा लगता है कि "राहे शौक में एक कदम कुछ ऐसा गल्त उठाया गया कि जिन्दगी भर मंजिल नहीं पा सकूंगा।" यहां संसारिक सुख आराम तो सब हैं, परन्तु उच्च जीवन धन बिना सब जीवन विनाशक हैं। श्रद्धेय श्रीमान हरमन्दिर सिंह जी चहिल जी के जीवन पर आप ने बहुत अच्छा लिखा है वह बहुत ही सीधे सादे तपस्वी त्यागी आत्मा थे परन्तु शोक उनको बहुत ज्यादा निराशा तथा Depression सहना पड़ा हालांकि यह भी अपनी निजी जिन्दगी के कारण नहीं बस समाज से उखड़ने का ही गम ले बैठा। वह बहुत ही मिलनसार तथा सात्विक जीवन धारी तथा कृतज्ञ हृदय थे उन के जीवन के आगे नत मस्तक हूँ।

धर्म जीवन के लेख "मोक्ष और विकास का मार्ग" "देवात्मा की मंगल कामना" "आप की ज्योति मुझे अपना जीवन दिखाती है" पढ़कर दिल श्रद्धा से झुक जाता है यहां विदेश में यह पत्रिकायें मुझ मुर्दा में नव जीवन संचार कर जाती हैं। आप कृपा करके मुझ तुच्छ को यह पत्रिकायें भेजकर मेरा बड़ा भला कर रहे हैं उस के लिये मैं आपको बार-बार धन्यवाद कह कर कृतज्ञता के सुमन अर्पित करता हूँ। आप सब के शुभ की मंगल कामना करता हूँ। आप 5-6 जन मिलकर बहुत उच्च कोटि की सेवा कर रहे हैं। आप सब की दीर्घ आयु हो।

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 10
अक्तूबर 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

केवल उपकार देख लेना शुक्रगुजारी नहीं

देव धर्म में उच्च भावों को पूरा महत्त्व दिया जाता है। उच्च भावों की ही सबसे बढ़कर कीमत दर्शाई जाती है। उच्च भावों को वा सर्वोच्च भावों को ही धर्म समझा जाता है। जिस मात्रा में किसी जन में उच्च भाव हैं उसी मात्रा में वह धर्मवान है। देवधर्मी होकर या सेवक बनकर धर्म नहीं आता। कुछ मिथ्या, पाप अवश्य झड़ते है।

हम मनुष्यात्माओं में हमारे गहरे अंहकार के कारण एक रुचि गहरी है कि हम अपने आपको सदा सुन्दर, अच्छा, ठीक, भला वा उच्च देखने की प्रवृत्ति रखते हैं। हमें अपना आप सदा सुन्दर निर्दोष और बढ़िया लगता है, ऐसा देखकर ही हम तृप्ति पाते हैं।

धर्म समाज का सदस्य बनकर, उच्च श्रेणियों में प्रवेश पाकर हमें मानसिक रूप से समझ आती है कि उच्च भाव मनुष्य को सुन्दर रूप देते हैं, उन्हीं से धर्म आता है। उच्च भाव विशेष रूप से श्रद्धा व शुक्रगुजारी के भाव की कदर कीमत का भी बहुत से सेवकों को अपनी समझ के द्वारा पता लग जाता है। इससे स्वभाविक ही वह अपने आपको श्रद्धावान वा कृतज्ञभाव धारी देखने और समझने लगते हैं, क्योंकि ऐसा समझने से ही उन्हें अपने आप को सुन्दर, निर्दोष और ठीक ठाक देखने की उनकी रुचि को तृप्ति मिलती है या मिल सकती है, परन्तु इस प्रकार सोच लेना वा विश्वास कर बैठना साधारणत: ठीक नहीं होता। हमारा अपने प्रति विश्वास कि हमारे भीतर अमुक - अमुक उच्च भाव वर्तमान हैं, सत्य नहीं, यह बात मिथ्या ही होती है। हम एक धोखे का शिकार ही होते हैं और रहते हैं।

शुक्रगुज़ारी का भाव बड़ा ही कीमती, महान और सुन्दर भाव है। इसके बिना कोई न उच्च जीवन हो सकता है और न ही धर्म आता है। यह बड़ा ही स्वर्गीय भाव है, इससे मानवता के आपसी सम्बन्धों में स्वर्ग आता है। परन्तु इस भाव की वर्तमानता मानव समाज में बहुत कम है। केवल सौ में से मुश्किल से एक या डेढ़ व्यक्ति ही कुछ कृतज्ञ या शुक्रगुज़ार होते हैं, बाकी सब नशुक्रे ही होते हैं। ऐसा गुरू महाराज ने फरमाया है। यह कहावत भी प्रसिद्ध है। Gratitude is Conspicuous by its absency अर्थात शुक्रगुज़ारी का पता ही इसकी अवर्तमानता से लगता है।

शुक्रगुज़ारी का भाव हमारे ऊपर जो उपकार होते हैं, उनको दिखाने का काम करता है। मोटे

उपकार अक्ल से ही नज़र आते हैं या आ सकते हैं। कुछ उपकारों को देख या याद कर, यह समझ लें कि वह शुक्रगुज़ारी है, बहुत बड़ी भ्रान्ति और धोखा है, गुमराही का शिकार होना है।

उपकार किसी प्रकार भी नज़र आएं, अक्ल से या कुछ शुक्रगुज़ारी की विरासत से, बहुत अच्छी चीज़ है। उपकारों का नज़र आना, उनका इज़हार करना बहुत अच्छी बात है, इससे भी अच्छा प्रभाव पड़ता है। उपकार बिल्कुल ही नज़र न आएं, इस मुकाबले में सुन्दर अवस्था है। भली व अच्छी बात है, परन्तु उसे कृतज्ञता या शुक्रगुज़ारी समझ कर विश्वास कर लेना ठीक नहीं, यह भ्रान्ति ही होगी। इसलिए सब अपना सच्चा हित चाहने वाले जन के लिए अपने भाव का निर्णय करना, उसको ठीक ठाक देखना Subjective होकर नहीं Objective होकर देखना बहुत अवश्यक है। इन विषयों पर सभाएं भी होती रहती हैं।

इसलिए अपने हित के सच्चे अकांक्षी प्रत्येक जन के लिए अवश्यक है कि वह शुक्रगुज़ारी के भाव के प्रकृत रूप को और उसकी गठन को समझे वा जानें, उसके पूरे लक्षणों को जानें।

प्रथम यह जानें कि शुक्रगुज़ारी का भाव एक निराली आंख है, जो उपकारियों के उपकारों के विशाल संसार को हमारे सामने खोलती है। यह भाव हमारा एक नई दुनियां में प्रवेश कराता है। इसके होने से एक या दो-चार उपकारियों के उपकार ही नज़र नहीं आते, इससे उपकारियों का विशाल संसार दिखाई देता है। माँ-बाप, भाई-बहन, अध्यापिक, स्कूल, कॉलेज, लेखक, डाक्टर वा हक़ीम, नौकर मालिक वा अन्य सेवाकारी, धर्म सम्बन्धी अनेक और जनों के उपकार सब दिखाई देने लगते हैं। पशु जगत, गाय, बकरियां, भैंसे, बैल, ऊंट, घोड़े, सांड, गधे, खचर आदि के उपकारों का संसार दिखाई देने लगता है। सुन्दर हितकर पक्षियों के उपकारों का संसार, पेड़ पौधों का संसार। घर, खेत, बिस्तरे, चारपाईयां, मशीनरी, फोन, टैलीफोन, बिजली, पंखे, कूलर, एअर कंडीशनर, रेलें, बसें, हवाई जहाज, नहरें, दरिया, समुन्द्र, हवाएं, पानी, झीलें, पहाड़ वा अनेक और वस्तुएं और उनकी सेवाओं की दुनियां। यदि हमारा ध्यान उपरोक्त विशाल उपकारियों के जगत की ओर बार बार जाता है, हम उनके उपकारों को याद करके नाच उठते हैं, उनके लिए कुछ करने के लिए उतावले हो जाते हैं, तो कुछ कृतज्ञता वा शुक्रगुज़ारी का भाव हो सकता है। यदि दो चार गिने चुनें उपकारी और उनके गिने चुने उपकार ही बताते हैं, तो इस ओर बहुत गहरे ध्यान वा रोशनी की आवश्यकता है।

शुक्रगुज़ारी के भाव की बनावट वा गठन गुरु महाराज ने विशेष ही बताई है। इस भाव के चार अवश्यक तत्व हैं।

1) उपकारी नज़र आने और अपने ऊपर किए उपकार दिखाई देने।
2) अपने ऊपर किए गए उपकार कर्जे की तरह अनुभव करना।
3) उपकारों के कर्जे का भार छाती पर बोझ की तरह अनुभव होना, उस बोझ को उतारने की तीव्र इच्छा और व्याकुलता।
4) उपकारियों की एक वा दूसरे प्रकार की सेवा करना, सेवा करके तृप्ति हासिल करना, ऐसी तृप्ति की बार बार इच्छा होना।

शुक्रगुज़ारी के भाव की बनावट से ही यह साफ हो जाता है कि केवल उपकारों को देखना और

उनका ज़ुबानी वा लिखित रूप से दर्शन करना ही कृतज्ञता नहीं। कृतज्ञता के भाव की पूर्ति के लिए दूसरे लक्षणों का, विशेष रूप से चौथे लक्षण का होना अति अवश्यक है, यदि लक्षण नहीं तो कोई कृतज्ञ भाव नहीं।

हमें गम्भीरता से सोचना होगा कि हम ने अपने उपकारी जनों की सेवा के लिए व्याकुलता अनुभव करके उनकी कोई सेवा की है या करते हैं और उच्च तृप्ति पाते हैं? क्या आप अपने किसी अध्यापिक की, उनके बच्चों की अपने स्कूलों कालिजों की कोई सेवा करते हो या पहले करते रहे हो? क्या अपने या अपने परिवार की सेवा करने वाले डाक्टरों की सेवा करते हो या पहले की हैं। क्या उनके किसी काम आए हो, क्या तुम्हारी कठिन समय में, हमदर्दी से, धन से, नेक सलाह मश्वरे से उत्साह प्रद सेवा करने वाले उपकारियों को कभी याद किया है? क्या उनकी सेवा करके तृप्ति पाते हो? क्या और नज़दीकी उपकारियों को याद किया है, क्या उनकी सेवा करके तृप्ति पाते हो? क्या उनके उपकारों को याद करके व्याकुल होते हो? गुरू महाराज के दर के साथ जोड़ने के लिए और उसके बाद आपकी रूहानी सेवा के बोझ को उतारने के लिए उतावले होते हो, और लगातार उसे उतारने का अवसर पाकर तृप्त होते हो?

मैंने अपनी-अपनी आंखो से देखा है कि श्रीमान नौध सिंह जी श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी को सारी उमर अपने विशेष उपकारी के रूप में महसूस करते थे। वह और उनकी धर्म पत्नी भी सदा नाश्ता उनको अपने घर में करवाकर, उनके वस्त्रों को धोकर जब तक श्रीमान जी जीवित रहे, उनकी विशेष सेवा करके तृप्ति पाती थी।

इसी प्रकार श्रीमान राम सिंह जी, श्रीमान गोपी चन्द जी के वस्त्र धोने, उनकी चारपाई बिस्तर बिछाने आदि की सेवा करके अपने उपकारी के जीते रहने तक करके उच्च तृप्ति पाते थे।

गुरु महाराज का फरमान, "जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह शख्स हमारे निकट खुदगर्ज़, कमीना और पापी कहलाता है" साफ प्रति उपकार का महत्त्व बताता है।

अपने उपकारी जनों की कोई सेवा, उनके लिए कोई त्याग किए बिना कोई शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता।

कुछ लक्षण और भी हैं जो हमारे शुक्रगुज़ार होने का निर्णय करने में सहायक हो सकते हैं।

क्या आप कभी अपने विशेष उपकारी की झूठी या सच्ची निन्दा की है या करते रहे हो? ऐसा करके सुख अनुभव होता था?

क्या आपने कभी अपने किसी उपकारी की हानि करते रहे हो और ऐसा करके तृप्ति पाते रहे हो?

क्या आप कभी अपने किसी विशेष उपकारी को नीचा दिखाने की, उसके काम को फेल करने का, उसको किसी भी भले पक्ष से हटाने का यत्न करते रहे हो या ऐसे यत्न में खुशी-खुशी सहयोग देकर तृप्ति पाते रहे हो।

इन प्रश्नों का 'हां' में उत्तर होने की सूरत में शुक्रगज़ारी की वर्तमानता का परिचय मिल सकता है।

हमारा 'मैं' का प्यार हमें अन्धेरे में रखता है, काश! हमें अपने अपने उच्च भावों के प्रति गुरु महाराज की बार-बार ज्योति पा पाकर ठीक अवस्था को जान सकें तो भ्रान्ति से मुक्त हो सकें।

(बलदेव सिंह)

मैं अमृत लोक का राही बन गया हूँ

(श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का एक पत्र)

मेरे ज्योति दाता, मेरे उद्धारकर्त्ता, विनाश की बहुत भयानक और दुखदाई गति से मुझ आहत कंगाल और दीन हीन को मोड़ कर, विकास की महा अमूल्य, अति सुखदाई और स्वर्गीय उच्च गति की ओर मुझे ले जाने वाले, मेरे इस दुनियां में सबसे बढ़ कर हितकारी, उपकारी और कल्याणकारी सम्बन्धी, मेरी पूजा के योग्य मेरे तारण हारे श्री देवगुरु जी!

हार्दिक नम्रता, गहरी श्रद्धा और भक्ति भाव से भर कर आपकी पवित्र चरण धूलि में सिर रख कर आर्शीवाद प्रार्थना करता हूं। मैं किस मुंह से आपको धन्यवाद दूं, किन शब्दों में आपके उपकारों को वर्णन करूं, कैसे मैं आपके गुण गांऊ, किस प्रकार मैं अपने भीतर के कृतज्ञता, भक्ति और सेवा के भावों का प्रकाश करूं, मुझे कुछ सूझ नहीं रहा। मैं इस समय आपके श्री चरणों में आने से पहले की अपनी अवस्था को अपने जीवन की गति को, उस समय की अपनी आन्तरिक छवि को अपने सन्मुख लाता हूं, और देखता हूं कि उस समय यद्यपि मैं मनुष्य का अस्तित्व रखता था, पढ़ा लिखा था, भला मानस और नेक कहलाता था, परन्तु वास्तव में जीवन के बहुत से अंगों के विचार से तो मैं बिल्कुल पशु था, और उसके अतिरिक्त जो कुछ था, वह मेरे आन्तरिक मैले, गन्दे और महा नीच भाव थे, जिनसे मैं परिचालित होकर पशुओं की सृष्टि की तुलना में बहुत नीच, मैला, और महा भयानक रूप से विनाशकारी अस्तित्व प्रमाणित होता था। मैं समझता था कि विद्या प्राप्ति में उन्नति कर रहा हूँ, मैं धन उपार्जन के बहुत योग्य होता जाता हूं, मैं नाना प्रकार के सुख भोग रहा हूं, और भविष्य में अधिक से अधिक सुख भोगने के सामान इकट्ठे कर रहा हूं, और मेरे मां बाप और अन्य कुल सम्बन्धी भी ऐसा ही समझते थे, और इसीलिए अत्यन्त हर्ष और हार्दिक उत्साह के साथ मेरे उस प्रकार के जीवन की गति में अपनी शक्तियों के अनुसार बहुत बड़े सहायक प्रमाणित होते थे। परन्तु अब मैं आपके श्री चरणों में आकर और आत्मिक ज्योति, जीवन तत्व ज्योति पाकर स्पष्ट देखता हूं कि मैं उस समय प्रकट रूप में सुख भोग कर और अधिक से अधिक सुख भोगने की आशा रखकर भी वास्तव में उसी प्रकार दिनों दिन अपने लिए दुखों और महा दुखों का सामान तैयार कर रहा था, जिस प्रकार एक व्यक्ति शराब पीने और वैश्याओं के पास जाने का अभ्यासी होकर देखने में तो सुख भोगता है किन्तु वास्तव में जहां घर बार, माल असबाब और अन्य सारी घर की पूंजी उजाड़ कर बाहर से नंग होता जाता है, वहां अपने शरीर को भी रात दिन अमिताचार और दुराचार के द्वारा अत्यन्त भयानक

और दुखदाई रोगों का घर बनाता चला जाता है। . ...ठीक इसी प्रकार की भयानक और दुखदाई गति मेरी थी। मैं एक वा दूसरी पाश्विक वासना का दास होकर उसकी तृप्ति के लिए एक वा दूसरे छूट जाने वाले पदार्थों से बन्धता चला जाता था और इसीलिए मेरा प्रयत्न, मेरे जीवन की प्रत्येक गति, मुझे मृत्यु और महा नर्क की ओर ले जा रही थी, जिससे मेरे भीतर दिनों दिन अंधकार बढ़ता जाता था, और दिनों दिन अन्धकार से भरे हुए मनुष्यों से घिरता जाता था, उन्हीं का रूप बनता जाता था। इस प्रकार की मेरी नीच और महा मलिन अवस्था जब मेरे सन्मुख आती है तो मेरा हृदय कांप उठता है, और कांप कर आपके चरणों में आ गिरता है। ऐसी महा भयानक और नारकीय अवस्था से निकाल लेने वाले परम हितकर सम्बन्धी को धन्य धन्य कहता तृप्त नहीं होता। और अब उस महा मलिन और नीच अवस्था की तुलना में जब मैं देखता हूं कि आपके श्री चरणों में आ जाने से न केवल इस महा नारकीय अवस्था से मेरा उद्धार हुआ है किन्तु मैं अमृत लोक का राही बन गया हूं, मैं अमर जीवन की सबसे बढ़कर पदवी का अधिकारी बनने के मार्ग पर जा रहा हूं, मैं अमृत रस को कुछ न कुछ लाभ करने के योग्य होता जाता हूं, मैं मनुष्य जीवन की वास्तविकता को जानने और उसको सफल करने के योग्य होता जाता हूं, तो एक एक समय में अपने आपको धन्यवाद आदि भावों के प्रकाश के लिए बहुत मजबूर पाता हूं। शब्द बहुत तुच्छ, मेरी योग्यताएं बहुत तुच्छ, बाह्यक सामानों के विचार से मैं अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिए भी दूसरों का मोहताज। ऐसी अवस्था में एक एक समय आपकी ऐसी पवित्र, परम हितकर और स्वर्गीय मूर्ति के लिए किसी प्रकार भी प्रसन्नता का कारण बनने का कोई उपाय न पाकर मेरे भीतर ही भीतर क्या गुजर जाता है, मैं कुछ वर्णन नहीं कर सकता।..... इसमें सन्देह नहीं कि.....मैं अपने आपको लाखों और करोड़ों की तुलना में ऐसे महोच्च और संसार के सकल पदों और उपाधियों से उच्च अधिकार का अधिकारी पाकर संसार के राजाओं और सम्राटों से बहुत बढ़कर धनवान और सौभाग्यवान अनुभव करता हूं। क्योंकि चाहे मैं कैसा ही मलिन हूं, कैसा ही बे हैसियत हूं, किन्तु इससे बढ़कर मेरी हैसियत को संसारिक बड़े से बड़े सामान और सम्पत्ति, पद और उपाधि क्या बढ़ा सकते हैं, कि मैं आपके महा उच्च और सब अंगों में कल्याणकारी रूप का एक तुच्छ सेवक हूं। आपके पवित्र चरणों का एक तुच्छ दास हूं। आपके पवित्र चरणों का दास होकर मुझे जिस अमृत की प्राप्ति होती है और उस अमृत को पाकर जिस अमर जीवन का मैं अधिकारी बनता जाता हूं, उसकी तुलना में संसार के सारे सामान और उनके सब प्रकार के सुख भी क्या मूल्य रखते हैं? उस अमृत के बिना बड़े से बड़े धनवान राजे और महाराजे अपनी सारी धन सम्पत्ति रख कर भी, सारे सुख के सामान एकत्र करके भी महा दुखी अवस्था को प्राप्त हो रहे हैं।

श्रीमान हरमिन्द्र सिंह जी चहल

सम्मान के योग्य श्रीमान हरमिन्द्र सिंह जी चहल 22 जुलाई 2006 शनिवार के दिन 5 बजे के लगभग अचानक विछोड़ा दे गए। ऐसे सच्चे वा ठोस साथी का चले जाना एक भारी घाटा है।

हरमिन्द्र सिंह जी बघेलेवाला जिला, फिरोज़पुर में कोई 70 वर्ष पहले जन्में थे। उनकी माता छोटी उमर में ही स्वर्गवास हो गई थी। इस घाटे की छाप सारी उमर उन पर रही। उन्होंने अपने बड़े भाई जसमिन्द्र सिंह जी के साथ मोगा देव समाज Boys स्कूल में पढ़ने का अवसर पाया। वहां पर श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रीमाव मेवा सिंह जी, श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी और उस समय विराजमान और कर्मचारियों के दर्शन करने का सौभाग्य भी मिला। वहां पर वह साधन, सभाओं में भी शामिल होते रहे। ऐसे प्रभावों के कारण उन्हें परम पू० भगवान देवात्मा का सेवक बनने का महा सौभाग्य प्राप्त हो गया, जिस सौभाग्य की कीमत सदा उनके जीवन में चमकती रही और उन्होंने इस सौभाग्य को कभी नहीं भुलाया।

बचपन में पढ़ने और परवरिश में उन्हें बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उनकी दिल्ली निवासी बुआ जी, जो बड़े अमीर घराने से सम्बन्धित थी, उन्होंने बहुत सहायता की। वह B.A. पास करके दिल्ली की एक लाईब्रेरी में नौकरी करने लग गए। कुछ समय बाद श्रीमान मोहन लाल जी दिल्ली के संग्राम से उनकी शादी बीबी प्रेम जी के साथ हो गई। वह हरिद्वार के देव समाजी परिवार से सम्बन्धित थी। उसके कुछ समय बाद चहल साहिब को इंग्लैंड जाने का सौभाग्य मिला, आप दोनों बहुत कुशलपूर्वक कई वर्ष इंगलैंड में रहे। वहां पर उनका अपना सुन्दर घर, कार और अन्य सुविधाएं भी प्राप्त थी। मुझे भी कई बार वहां जाकर सभाएं करवाने का अवसर मिलता रहा। वहां वह धर्म सम्बन्धियों की बहुत सेवा करते थे।

उनका मुंह सदा गुरू महाराज की ओर रहा और विदेश में रहते हुए भी सदा अपनी शुभ प्रतिज्ञाओं पर पक्के रहे। व्यवहार में सच्चे और सेवाकारी होने के कारण, इनका प्रभाव श्रीमान कैलाश चन्द्र जी पर भी पड़ा, हेम राज जी गोयल भी उनसे प्रभावित रहे हैं। इन सबको विरोधी हालात में बुराईयों से बचने को सौभाग्य मिला रहा। उन्हें चहल साहिब से बहुत ठोस सहायता वा प्रेरणा प्राप्त होती रही। वह हमेशा उनके घर में सभा साधनों में शामिल होते रहे। अपने घरों में भी वह सभाएं करवाते रहे।

1980 के दशक में इनके दिल पर गुरू महाराज के मिशन में निष्काम सेवाकारी होने का जोरदार भाव पैदा हुआ। इनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी। खाने पीने के हालात बहुत अच्छे थे, इसलिए उनका यह भाव दिन पर दिन ज़ोर पकड़ता गया। श्रीमान कैलाशचन्द्र जी शर्मा जी को भी गुरु महाराज मिशन में आकर सहायकारी होने की प्रेरणा इन्हीं से मिली। वह इनसे भी कुछ समय पहले ही भारत आने जाने लग गए थे। वह यहां बहुत जल्दी ही कौंसल के मैंबर बन गए। उससे थोड़ी देर बाद आप भी अपनी सब सुविधाएं छोड़कर बहुत अच्छे भावों से इंग्लैंड को छोड़कर, गुरू मिशन में सेवाकारी होने के लिए भारत आ गये। कैसे मुबारक भाव! कैसा सुन्दर वा मुबारक कदम।

पहले वह इंग्लैंड की सर्दी छोड़कर वह सोलन चले गए, वहां कुछ देर ठहर कर सेवाकारी हुए। वहां बड़ों की आज्ञा पालन करते हुए उन्हें अकारण ही बहुत भयानक हालातों का सामना करना पड़ा। दो नौजवानों

के विश्वास घात करने के कारण महाराज की बग्घी खाने वाले स्थान पर जबरन कब्ज़ा करने की कोशिश को रोकने के लिए उन्हें तीन चार और धर्म सम्बन्धियों समेत चोटें खानी पड़ी, कुछ दिन हवालात में भी रहे। यह आपकी गुरु मिशन के लिए बड़ी कुर्बानी थी, जो आपने खुशी खुशी की। आपके इस जजबे को सामने लाकर मेरा दिल आपके माता पिता के चरणों में बेबस झुक रहा है और उनके चरणों में सिर रखने को दिल करता है। आप कभी भी गुरु घर के दूध पीने वाले मजनूं नहीं बने। फिर आंतकवाद के हालात कारण आप चण्डीगढ़ आ गए।

चण्डीगढ़ आकर समाज के हैड ऑफिस में बहुत साल कड़ी मेहनत से काम किया। वह काम भी बहुत साफ सुथरे ढंग से करते रहे। उनकी यह सेवा विशेष रूप से प्रशंसनिय है। वह अधूरा वा लाग लपेट वाला काम नहीं करते थे।

चण्डीगढ़ आकर उन्होंने हैड ऑफिस से पैदल चलकर जाने की दूरी पर सैक्टर 22-डी मकान नं 3055 स्वयं अच्छी कीमत पर खरीद लिया और उसमें रहने लगे। वह मकान आज बहुत कीमती सम्पति है।

उनको माता पिता से श्रद्धा की शानदार पूंजी मिली थी। वह कुछ विशेष बड़ों के लिए बहुत गहरी श्रद्धा रखते थे। वही श्रद्धा उन्हें इंग्लैड से भारत खींच लाई। शोक इस श्रद्धा को सही दिशा में जाने के अवसर उनको प्राप्त न हो सके, इसलिए वह साधन शील होने और गहराई से देवात्मा की शिक्षा का अध्ययन करने के मार्ग पर न पड़ सके। यदि ऐसा अवसर मिल जाता तो वह प्रचार में और स्वयं की उन्नति करने के र्माग पर पड़कर जीवन और भी सफल कर जाते।

चण्डीगढ़ हैड ऑफिस में वह पूरे त्याग और लगन से सेवाकारी हो रहे थे कि 1995 में गुरु मिशन के भीतर और भयानक हालात बन गए। जिसमें कुछ धर्म सम्बन्धी वा प्रबन्धक बिल्कुल बेघर और बेसहारा हो गए। बड़े संकट का समय था। दिशाहीन अवस्था थी, जिन लोगों के लिए वह बेहद श्रद्धा रखते थे, उनके आगे भी अन्धेरा ही अन्धेरा था।

परन्तु ऐसे समय में कुछ चहल साहिब जैसे सच्चाई पसन्द जनों ने हिम्मत करके उन निराश और परास्त प्रबन्धकों का साथ देने वा सहायता करने का उत्साह दिखाया, जबकि प्रबन्धकों को यह आशा नहीं थी कि ऐसी मुश्किल घड़ी में चहल साहिब उनका साथ देगे। गुरु मिशन पर आई कठिनाई में चहल साहिब भामाशाह बन गए। उन्होंने अपने खून पसीने की कमाई में से एक लाख रू० गुरु मिशन से निष्कासित प्रबन्धकों को खुशी खुशी दे दिए और यह भी कहा कि जरूरत पड़ने पर मैं और भी दूंगा। अपने घर में कितने कितने जनों के खाने का प्रबन्ध करते रहे। उस समय उनकी सेवा की प्रशंसा भी बहुत हुई।

वाह! इन्सानों की परख़ कठिनाई के समय होती है। देव समाज के भामाशाह ने एक अनोखी मिसाल कायम कर दी। काफी किफायत शार होते हुए भी गुरु मिशन पर निस्सार होने का जज़बा था। ऐसे इन्सान के आगे यदि दिल सजदा न करें और बार शाबाश न कहें तो क्या करे, अगर उनके कदमों में बार बार न झुकें तो किसके कदमों में झुकें। ऐसे साथी पर फख़र न करें, तो किस पर फख़र करें, वाह! मिशन के भामाशाह वाह! वह बातों के धनी नहीं, किरदार के धनी थे।

कौंसल में स्थान पूर्ति के लिए बलबहादुर सिंह जी के नाम की चर्चा गर्म थी, किसी को भी चहल साहिब का ख्याल तक नहीं था, परन्तु बलबहादुर सिंह जी ने सरलता से कहा कि मैं अपने से चहल साहिब को इस योग्य समझता हूं। इस बात ने कुछ समय बाद चहल साहिब को ही कौंसल का मैंम्बर बना दिया। कुछ समय इस पद पर रहे, फिर कुछ हालात पैदा हुए वह इस पद पर नहीं रहे। उनकी गुरु के प्रति श्रद्धा में कोई

कमी नहीं आई। इस बात से उनके मन में भारी ठेस लगना अवश्यक था।

एक बुरी आदत, नशों, विषयों आदि से कोई मनुष्य पूरी तरह रहित हो, वह सबके सन्मान का पात्र बन जाता है। जो आठ मोटे पापों, बुराईयों का पक्का त्यागी हो, वह तो बहुत ही सन्मान के योग्य होता है, बहुत कम लोग ऐसा कर पाते हैं। चहल साहिब निराले गुरु के सेवक थे, वह सब बुराईयों से बचे हुए थे। इंग्लैंड से रहकर भी वह कभी इस में शिथिल नहीं हुए, वह उच्च श्रेणियां चढ़ते गए, गुरु मिशन के कर्मचारी बनें और आखरी समय तक रहे।

गुरु महाराज की शिक्षा के कारण वह मोटे झूठे मिथ्या विश्वासों वा भ्रमों से भी बचे हुए थे। वह किसी भी देवी देवते, गुरु, पीर वली को अपना ईष्ट नहीं मानते थे। वह केवल और केवल परम पू० भगवान देवात्मा को ही सच्चा देवता और अपना उपास्य मानते थे। इस संसार में बहुत कम लोग ऐसे विश्वासी मिलते हैं।

आठ पाप त्यागी और देवात्मा का विश्वासी होकर प्रत्येक मनुष्य सच्चे सन्मान और समादर का अधिकारी हो जाता है। आप तो इससे भी आगे बढ़ गए थे। आप ने अपने लासानी और परम उपकारी गुरु के पाक मिशन के लिए 20 साल से भी अधिक समय सेवा में लगाया। आपने 50 वर्ष तक होने से भी पहले इंगलैंड वास की सुख सुविधाओं को त्याग दिया और गुरु दर की चाकरी करने के लिए भारत पहुंच गए और अपनी ज़िन्दगी के 20 वर्ष से भी अधिक अपनी योग्यता के अनुसार गुरु मिशन में भेंट कर दिए। यह उनका सुन्दर और उच्च पक्ष है, जो सदा सदा के लिए गुरु मिशन के लिए सदके जानें के लिए उभारता वा प्रेरणा दायक बना रहेगा और उनके लिए सदा सम्मान से भर कर झुकाता रहेगा। कोई माई का लाल ही इस मोह माया के जाल में फंसे संसार में ऐसा कदम उठाता है और गुरु भेंट चढ़ता है।

आपको गुरु मिशन में अपने भले के इलावा कोई स्वार्थ नहीं था। आपके पास अपना स्वंय का घर, स्वंय की सवारी और गुजारे के योग्य काफी जमा पूंजी थी। किसी संसारिक जरूरतों के लिए वह गुरु पर निर्भर नहीं थे, न ही अधिक मान सन्मान की भूख थी।

देवात्मा सत्गुरु के मिशन और उनकी आद्वितीय विज्ञानमूलक शिक्षा के लिए उनका सम्बन्ध इस स्तर तक था, वह निम्नलिखित घटना से पता लगता है।

उनकी छोटी उमर में ही माता पिता इस संसार से चले गए। वह अपनी अवश्यकताओं और पढ़ाई लिखाई के लिए अपनी भुआ पर निर्भर थे। उन्हीं के घर में रहते थे, उनके फूफा जी काफी अमीर लोगों में गिने जाते थे। उन्होंने कोई पूजा पाठ करवाई, हरमिन्द्र सिंह जी ने उनके मुंह पर ही उस पूजा पाठ को मिथ्या बताना शुरू कर दिया। वह Blunt होकर भी सच्चाई का साथ देते थे, उनका कुछ वाद - विवाद हो गया, इसका उनके दिन पर गहरा असर पड़ा, उन्होंने महसूस किया कि धन के गरूर में मेरे साथ ऐसा व्यवहार हो रहा है। मेरा गुरु विश्व में एक मात्र ऐसी हस्ती है, जो पूर्ण सत्य अनुरागी और सत्य स्वरूप है। शुभ अनुरागी वा शुभ स्वरुप है। मनुष्य सुखों के दास हैं, उनका उन्हें न समझना और उल्टे रूप में देखना स्वभाविक है। मैं उनके साथ कोई ताल - मेल नहीं रख सकता। उन्होंने वहीं घोषित कर दिया कि मैं यहां नहीं रहूंगा। उनके लिए सुख सुविधाएं छोड़ना मामूली बात बन गई, परन्तु गुरु की शिक्षा को गल्त सुनना कठिन बन गया। अपने निकटी रिश्तेदार, उनके यहां रिहायश और माली सहायता छोड़कर अपना ठिकाना अलग बना लिया, वहां हम उनके पास जाकर मिलते रहे हैं।

उसके बाद वह इंग्लैंड चले गए। सच्चाई का साथ देते वक्त वह पूरे अड़ियल वा अक्खड़ रवैया अपना लेते थे। एक एक समय गुरु मिशन के लिए

श्रद्धा से भरकर मर मिटने के दुर्लभ जज़बे से ओत प्रोत हो जाते थे। ऐसे हृदय को शत शत नमन न करें तो किसे करें।

वह बहुत सीधे सादे, स्पष्ट और एक टुक इन्सान थे। वह छल कपट जानते ही न थे। जिनको वह बड़ा समझते थे, उनके आगे कभी झुके बिना नहीं रह सकते थे। वह कौंसल के मैंम्बर होकर भी मुझ तुच्छ के आगे सन्मान पूर्वक झुके बिना नहीं रह सकते थे और सन्मान देते समय वह न झिझकते थे और न ही आगे पीछे देखते थे। यह उनका विशेष गुण था, मुझे उनके ऐसे पक्ष की विशेष कदर है।

देवात्मा का मिशन नेचर के विकास का नियम का पूरा साथी वा समर्थक है और विकास के नियम के पूरा अनुकूल है। जो हृदय दिल से निस्वार्थ होकर इस मिशन के लिए कील कांटा बनता है, कुछ त्याग करता है, विकास का नियम उनकी बड़ी सहायता करता है। अपने साधु स्वभाव के अनुसार चहल साहिब ने सोचा कि इंग्लैंड जाने की अब जरूरत नहीं तो वहां की Citizenship रखकर क्या करना है। इस सम्बन्ध में वह चण्डीगढ़ के दफ्तर में गए और Citizenship कैंसल करवाने के लिए प्रार्थना पत्र देने लगे। अचानक किसी काम के लिए मैं भी वहां पहुंचा हुआ था, उन्होंने मुझे अपना मकसद बताया। मैंने उन्हें बताया कि आप की Citizenship गुरु मिशन में कोई रुकावट नहीं बन रही, उन्होंने मेरी बात मान ली और इस कारण उमर आने पर प्रेम जी चहल की अच्छी खासी Pension लग गई, आर्थिक पक्ष में वह और भी सुरक्षित हो गए। इस बात की काफी खुशी अनुभव करते थे। जो सच्चे दिल से कुर्बान होता है, उसकी नेचर किसी न किसी रूप में अवश्य सहायता करती है।

चहल साहिब जी जैसे इन्सान की मिशन को अभी कम से कम 12 - 15 वर्ष और अवश्यकता थी। वह अचानक अपनी अबोधता के कारण और कुछ हमारी अज्ञानता के कारण देखते देखते ही हाथों से निकल गए। ऐसे साफ, स्पष्ट, सीधे सादे, निस्वार्थी, सेवाकारी सेवक का बेमौके चले जाना बहुत घाटे की बात है। काश! यह घाटा किसी प्रकार पूरा हो सके। श्रीमति प्रेम जी चहल इस सदमें को सहने की शक्ति प्राप्त कर सकें। चहल साहिब को परलोक में अच्छे सहायकारी सामान वा सम्बन्धी प्राप्त हो सकें। उनके आत्मा को शान्ति प्राप्त हो और उनका शुभ हो।

उनसे बिछड़ा हुआ उनका साथी सेवक
बलदेव सिंह

सुकरात का 'यस - यस' तरीका

लोगों से बातचीत करते वक्त हमें अपने वार्तालाप की शुरुआत उन चीजों से करनी चाहिए, जहां पर दोनों एक मत हों और सामने वाले व्यक्ति को यस - यस कहने की स्थिति में लाने की कोशिश करनी चाहिए। इससे सकारात्मक सोच बनती है और ऐसी वातीं हमें अपने उद्देश्य में सफल बनाती है। प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात यही तकनीक अपनाते थे। वे अपनी बात न मानने वाले व्यक्तियों से ऐसे सवाल करते थे, जिनका जवाब हां में ही होता था। अपनी इस विधि से सुकरात ने कई प्रतिद्वंदियों को अपना बनाया, जो आगे चलकर उनके मिशन का हिस्सा बनें। मार्केटिंग के फील्ड से जुड़े लोग इस तरीके को अपनाकर अपनी कार्य - प्रणाली को और भी प्रभावशाली बना सकते हैं। दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों के वरिष्ठ मार्केटिंग पदाधिकारियों में इसे एक आम क्वालिटी के रूप में देख जा सकता है। इस पद्धति को अपना कर आप भी जीवन में सफलता अर्जित करें

परलोक सत्य है

परलोक के विषय में भिन्न-भिन्न धारणाएं बनी हुई हैं। परलोक पर विश्वास करने के लिए हमारे पास ठोस धरातल है। वह है पू० भगवान देवात्मा की परलोक के विषय में शिक्षा। परम पू० भगवान देवात्मा सत्य के पूर्ण अनुरागी होकर पूर्ण सत्य की कसौटी पर तोले बिना हमें कोई शिक्षा दे ही नहीं सकते थे। उन्होंने एक ओर इस विषय पर घोर अध्ययन किया, दूसरी ओर बहुत संग्राम करके उन्होंने परलोक वासियों के साथ सम्पर्क करके परलोक के विषय में ज्ञान प्राप्त किया और फिर उन्होंने विज्ञान को आधार बना कर सत्य की कसौटियों पर परख कर इसकी शिक्षा दी।

इसलिए इस में थोड़ा भी सन्देह नहीं कि परलोक सत्य है। जिस प्रकार परम पू० भगवान देवात्मा ने हमें शिक्षा दी है, उसके अनुसार हमारा जीवन ही निर्धारित करता है कि हम परलोक के किस लोक में जाने के अधिकारी हैं। इस दुनियां से परलोक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां पर उच्च और नीच जीवन-धारियों को गडमड होकर नहीं रहना पड़ता। अपने जीवन के उच्च नीच जीवन स्तर से ही उनका स्थान निर्धारित होता है। हमारा प्रत्येक कर्म हमारे सूक्ष्म सैल बनाने में कार्यरत है। और सूक्ष्म सैलों के अच्छे बुरे बनने पर ही हमारा सूक्ष्म शरीर बनता है।

मुझे एक किताब पढ़ने का अवसर मिला है, जो ऐंथनी बोरजिया द्वारा लिखित है, जिसका नाम है "Life in the world unseen" अर्थात अनदेखी दुनियां की जिन्दगी। यह ऐसी किताब है, जिसमें परलोक की सचाईयों को बताया गया है। सर्वप्रथम जो सचाई बताई गई है, वह यह कि जैसे माता के गर्भ में ही बच्चा जो शारीरिक, मानसिक वा हार्दिक पूंजी लेकर आता है उसी के अनुसार वह विकास पाता है। यह पूंजी उसे अपने बर्जुरगों से की कई नसलों से मिलती है, परन्तु इस दुनियां में रहकर वह जिस प्रकार विनाश वा विकास के कर्म करता है, वह उसकी परलोक की जिन्दगी पर प्रभावी होते हैं।

लेखक ने लिखा है कि इस लोक से परे परलोक में रहने वाले जन के सम्पर्क से ही हम परलोक की असल सचाई को जान सकते हैं। उन्होंने लिखा है कि 1909 ई० में जिस रूह के साथ उनका सम्पर्क हुआ वह 5 वर्ष पहले यह दुनियां छोड़ चुकी थी। उनका नाम राबरट हग बैनसन था, वह ऐडवरड वाईट बैडनसन, जो कैंटरबरी के आर्कबिषिप थे, उनके बेटे थे।

लेखक को एक परलोक वासी मित्र के द्वारा उनका सन्देश मिला कि वह कुछ बताना चाहते हैं और कुछ गल्त बातों को ठीक करना चाहते हैं, परन्तु उन्हें कोई ठीक मीडियम नहीं मिला, परन्तु जब उन्हें इस पृथ्वी का एक पुराना मित्र मिडीयम के रूप में मिला तो उन्होंने परलोक के विषय में बहुत ज्ञानपूर्वक जानकारी दी, जिसको लेखक ने रिकारड करने का सौभाग्य पाया। पहली किताब जो लिखी गई उसका हैडिंग था। Beyond this life" (इस जिन्दगी से परे) और दूसरी The world useen लिखी, जिसको मैंने पढ़ा है और

उसकी हितकर जानकारी मैं पाठकों को अवश्य देना चाहूँगी।

पहली किताब में तो केवल नीच लोकों और उच्च लोकों का वर्णन है। इस किताब में उन लोकों को विजिट करके उन्होंने अपने तजरबे लिखवाए हैं।

सर्वप्रथम उन्होंने लिखवाया कि मैं क्या हूँ, यह कोई अर्थ नहीं रखता, इस पृथ्वी के पद, पोजीशन परलोक में हम साथ नहीं ले जा सकते ।

उन्होंने लिखा है कि इस पृथ्वी पर मैंने अधिकतर मानसिक काम किए थे, शारीरिक परिश्रम नहीं किया था। मेरा रूझान ईसाई मत की ओर था, उसकी शिक्षा, रस्मों रिवाज में मैं सन्तुष्ट था, परन्तु परलोक में आकर उसके मायने ही बदल गए। मुझे पुरानी धार्मिक किताबों के अनुसार ही हमें शिक्षा दी जाती थी। जो परलोक में आकर पता लगा कि वह शिक्षा गलत थी। इस दुनियां में रहते हुए भी मेरे अन्दर प्रश्न होते थे, परन्तु कुछ भी साफ साफ दिखाई नहीं देता था। धार्मिक किताबें लिखने वाले वास्तव में स्वंय ही सचाई नहीं जानते, वह मेरे प्रश्नों का उत्तर क्या देते।

मृत्यु के समय का अनुभव :- *जैसे स्वप्न में हमारा शरीर वास्तव में काम नहीं करता, उसी प्रकार मेरा दिमाग और सोच चल रही थी, ऐसे लग रहा था कि जैसे हवा में तैर रहा हूँ, थोड़ी देर बाद मैं खड़ा था, मेरा शरीर उसी प्रकार पड़ा था, वही शक्ल, परन्तु सेहत मन्द हालत में और उसी प्रकार के कपड़ों में। तब मुझे आभास हुआ कि मैं मर चुका हूँ। तभी मैंने अपना एक पुराना पादरी साथी देखा, जो कुछ वर्ष पहले मर चुका था। वह भी मेरे जैसे कपड़े में था। पादरी के कपड़ों में नहीं थे। हमने एक दूसरे को Greet किया और उसी समय वह विश्वास कि कोई Judgement Day होता है, या कोई तुम्हारे पाप पुण्य का हिसाब रखने की सीट बनी होती है, मेरे दिमाग से निकल गया। मिथ्या स्वर्ग (Heaven) नर्क (Hell) की जो रूप रेखा बताई है, वह बिल्कुल झूठ है।*

मेरे साथी ने मेरा खूब स्वागत किया और मुझे बहुत ही विस्मय जनक जिन्दगी देखने के लिए तैयार किया। उन्होंने मुझे वह स्थान छोड़ने को कहा, मैंने आखरी बार उस स्थान को देखा, अपने बिमार शरीर को मुर्दा पड़े देखकर मैं कुछ भी प्रभावित नहीं हुआ। फिर मेरे साथी ने मुझे अपने साथ जाने को कहा।

वहां पर जीवन के उच्च वा नीच के स्तर के हिसाब से आपका स्थान निर्धारित होता है, वहां कोई अन्याय नहीं न ही कोई रिश्वत देकर या किसी अल्ला, वाहगुरु, Charist का नाम जपने से तुम्हें उच्च लोक प्राप्त होता है। यह हकीकत तो परलोक में जाते ही साफ हो जाती है।

एक ओर उन जनों के लिए जो इस दुनियां में उच्च जीवन रखते हैं, परलोक इस संसार से कहीं आकर्षिणिय स्थान है। उच्च जीवन का अर्थ यह नहीं कि हम कुछ पापों से बचे हुए हैं, कोई कत्लेआम नहीं करते, गाली गलौच नहीं करते मोटी बेईमानी नहीं करते, उच्च जीवन का अर्थ है कि हम निर्माण का क्या काम करते हैं। हम अपने से निकलकर दूसरों के लिए क्या करते हैं, सचाई का कितना साथ देते हैं। निस्वार्थ परोपकार ही परलोक में सहायकारी है। किसी धर्म को मानना या न मानना कोई अर्थ नहीं रखता, न ही आप जिनका नाम जपते रहे, वह आपकी कोई भी

सहायता कर सकते हैं। परलोक में तो दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है।

बड़े बड़े पदाधारियों, अमीरों की दुर्दशा का वर्णन किया कि वह कैसे दुखी जिन्दगी काटते हैं। बड़े धर्म के पुजारी जो अपने उन मिथ्या विश्वासों से नहीं निकल सकते कैसे मानसिक तौर पर विकलांग दिखाई देते हैं। परन्तु सारी उमर दूसरों के लिए जीने वाले चाहे इस दुनियां में कितने ही तिरस्कारे गए हों, आलीशान हालातों को प्राप्त करते है। हमारे कर्मो का ही नहीं हमारी चिन्ताओं का भी वहां हिसाब है।

उस परलोक वासी आत्मा ने जहां उच्च लोकों का ऐसा शानदार नक्शा खींचा है, जहां परोपकारी रूहों का वास है, वहां नीच जीवन धारियों तरसनाक, दुखदाई हालात का वर्णन किया है, उन्होंने यह भी लिखा है कि उच्च लोक वासी आत्माएं किस प्रकार हमारी सहायता करती हैं, स्वंय को उन्होंने Medium लोक का वासी बताया, उसकी सुन्दरता भी उन्होंने लिखा है कि वर्णन नहीं की जा सकती, ऊपर के Realems की सुन्दरता तो कल्पना से भी परे है। उच्च लोकों से कभी कभी आत्माएं आती हैं, तो उनके प्रवेश से ही जैसे रूहें पवित्रता के जबरदस्त प्रभाव हासिल करती हैं। जैसे तपते रेगिस्तान में ठण्डी हवाओं के झोंके।

उन्होंने पादरी होकर अपने धर्म की मिथ्याओं को भी उस लोक में जाकर अनुभव किया और दुख अनुभव किया कि जो मैंने झूठ का प्रचार किया, उसको कैसे ठीक करूं, इसके लिए मैं तड़पता हूँ।

काश! हम इन सचाईयो को अनुभव करके जीवन का रुख बदल सकें।

सुरजीत बराड़

परलोक वासी कैप्टन की आत्मा का रहस्य

23 पंजाब रेजीमेंट के सिपाही हरभजन 1966 में सिक्किम के नाथू-ला बार्डर पर तैनात थे। 1968 को एक दिन पेट्रोलिंग के दौरान पाठ करने बैठे हर भजन सिंह बर्फ खिसकने से नीचे दब गए और उनका निधन हो गया। उनकी मौत की पुष्टि न होने के कारण सेना ने उन्हें एक बार तो भगौड़ा घोषित कर चुकी थी। लेकिन जब वह लगातार अपने साथियों व अधिकारियों के स्वप्न में आते रहे तो ये राज खुला कि वे आज भी उस क्षेत्र में बावर्दी अपनी ड्यूटी पर तैनात हैं। इसी के चलते हर साल उनकी तरक्की होती रही और बाकायदा इंक्रीमेंट भी लगती रही। अधिकारी आज भी उसे ऐसा प्राणी मानते हैं जो मरकर भी एक सजग प्रहरी की तरह देश की सरहदों की रक्षा कर रहा है।

रहस्य : घर लौटी शहीद फौजी की 'आत्मा' :- वीरवार रात करीब 9:45 बजे डिबरूगढ़ एक्सप्रेस के एसी टू टायर के रिजर्वड डिब्बे में उनकी सीट आज फिर आरक्षित थी। उनके साथ उनका निजी सामान और सेना के दो जेसीओज भी थे। परिजनों की ओर से उनके स्वागत की पूरी तैयारी थी। ये सब ताम झाम कभी भारत-चीन सीमा तक नाथू-ला बार्डर पर तैनात रहे शहीद कैप्टन

हरभजन सिंह की 'आत्मा' की घर वापसी के लिए थी, जो दो माह की सालाना छुट्टी के लिए अपने घर जा रही थी। जालंधर रेलवे स्टेशन पर इंतजार कर रहे शहीद के श्रद्धालुओं व परिजनों ने कैप्टन हरभजन सिंह की आत्मा का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्हें स्टेशन से सूमों में बैठाकर जिला कपूरथला के गांव कूका तलवंडी ले जाया गया। उधर, पूरा गांव उनके दर्शन के लिए आंखें बिछाए बैठा था। चार अक्टूबर को उनके पैतृक गांव में उनके नाम पर बने गुरुद्वारा साहिब में उनकी बरसी धूमधाम से मनाई जाएगी। छुट्टी काटने के बाद कैप्टन सिंह की आत्मा दो महीने बाद 15 नंवबर को ड्यूटी पर लौट जाएगी। हालांकि बीते साल उन्होंने रिटायर होना था, लेकिन उन्हें एक वर्ष का एक्सटेंशन दे दिया गया था। इस बार एक्सटेंशन की अवधि फिर बढ़ाई जा रही है और वे रिटायर नहीं हो रहे। उन्हें छोड़ने के लिए 5 ग्रेनेडर्स बटालियन के दो सूबेदार बलवीर सिंह और हवलदार शक्ति सिंह आए थे। वह अपने कैप्टन को छोड़ने आने पर बहुत खुशी महसूस कर रहे थे। वह आज रात उन्हीं के घर रुक कर सुबह चले जाएंगे। छुट्टी काटने के बाद वे ही कैप्टन की आत्मा को अपने साथ वापस ड्यूटी पर ने जाएंगे।

सिटी रेलवे स्टेशन पर कैप्टन हरभजन सिंह की माता अमर कौर के अलावा भाई रतन सिंह व अन्य परिजन पहुंचे हुए थे। सिटी स्टेशन पर कैप्टन के पहुंचते ही प्लेटफार्म 'जो बोले सो निहाल, सतश्री अकाल' के जयकार से गूंज उठा। कैप्टन हरभजन सिंह की भी जय जयकार हुई।

उनके दर्शन के लिए लोगों की भारी भीड़ स्टेशन पर उमड़ पड़ी जिनमें भारी पैमाने पर मीडिया के लोग भी थे। एसी टू-टायर कम्पार्टमेंट से सबसे पहले पहले उनका सामान उतारा गया और फिर उनको पैदल ही प्लेटफार्म नंबर-1 से मुख्य गेट तक ले जाया गया उन्हें गेट के बाहर खड़ी सूमो गाड़ी में बैठाया गया और परिजनों की तरफ से प्रसाद भी बांटा गया। स्टेशन पर लोगों में कैप्टन हरभजन सिंह के दर्शन पाने के लिए ललक थी।

बेसब्री से होता है इंतजार

रतन सिंह ने बताया कि घर में कैप्टन के लिए एक कमरा अलग से तैयार किया गया है। इस दौरान उनकी पसंद का खाना भी रोज तैयार होता है जिसे बाद में गरीबों में बांटा जाता है उनकी मां अमर कौर का कहना है कि बेटे की आत्मा घर आती है तो उनकी बेटे को मौजदगी का एहसास होता है। दैनिक भास्कर 15.09.2006

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

अध्यापक का दर्जा

आज 5 सितम्बर है जो अध्यापिक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस में गाने, खाने पीने के लिए मनाने से अधिक कुछ नहीं किया जाता। इस प्रकार अध्यापिक दिवस अपना महत्त्व खो रहा है।

यदि इस दिन अध्यापिक में क्या गुण होने चाहिए, इसका व्यवहार विद्यार्थियों के प्रति क्या होना चाहिए और किन किन गुणों से सम्पन्न होने पर ही विद्यार्थी अध्यापिक को गुरु का दर्जा दे सकता है, इस पर भाषण प्रतियोगिताएं हों और अध्यापिक अगले वर्ष तक अपने पढ़ाने के तरीकों को बदलाव लाने के लिए कृतसंकल्प हों और विद्यार्थी अपना ध्यान पढ़ाई की तरफ लगाएं और अध्यापिकों के लिए दिए हुए पाठ पर ध्यान देने का संकल्प करें तो इस दिन का महत्त्व बहुत बढ़ सकता है।

यह बात पुराने समय से कही जाती है कि अध्यापिक का स्थान गुरु के समान होता है, जब यह बात कही गई थी, उस समय अध्यापिकों की समर्पण भावना, उनका त्याग, उनका विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण करने, उन्हें शिक्षित करने में उच्चतम स्थान था। राजकुमारों को शिक्षकों के पास भेजा जाता था, जो उनमें कठिन परिश्रम करने, सब तरह से अपनी सुरक्षा वा प्रजा की सुरक्षा करने के योग्य बनाते थे। वह उन्हें अपने गुस्से पर काबू पाने, कठिनाईयों में भी धैर्य्य बनाए रखने, शत्रु के प्रति भी सहनशील होने का सबक सिखाते थे। वह समय बीत गया, शिक्षा के ढंग बदल गए और धीरे-धीरे चन्द समर्पित भाव से काम करने वाले अध्यापिकों को छोड़कर बाकी ने इसे केवल रोज़ी रोटी का साधन बना लिया। पहले अध्यापिक low paid थे - अब उन्हें काफी मोटी तनख्वाह मिलती है, पर क्या अधिक पैसे लेकर उनके काम में बढौतरी हुई, बिल्कुल नहीं। पढ़ाई कर स्तर दिन पर दिन गिरता जा रहा है। क्लासों में पढ़ाई न होने के कारण 90% बच्चे Tutions पर निर्भर हैं। माता पिता मोटी फीसें देने के बाद भारी भरकम रक़म Tutions में देते हैं। बहुत से अध्यापिकों की यह आदत हो जाती है कि क्लास में लेट जाएं ताकि कम काम करना पड़े। पिछड़े हुए इलाकों में तो स्थिति और बदत्तर है। अध्यापिक या तो जाते नहीं, यदि जाते हैं तो वहां भी अपना काम करते रहते हैं, या गप्पें हांकते रहते हैं। इसी प्रकार गांव से एक लड़की आई जो वहां चौथी क्लास में पढ़ती थी, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसे 10 तक लिखना वा अ, आ तक नहीं आता था। अब ऐसे अध्यापिकों को बच्चे क्या सम्मान देंगे और गुरु का दर्जा देना तो दूर की बात है।

आज कल अध्यापिकों की आम शिकायत है कि बच्चे उदण्ड होते जा रहे हैं, वह अध्यापिकों का कहना नहीं मानते। इसमें भी अध्यापिक बहुत योगदान दे सकते हैं। बच्चे प्यार, स्नेह और हमदर्दी चाहते हैं, यदि उन्हें कभी कभी उनको पढ़ाई का महत्त्व Lecture के रूप में नहीं, बल्कि Practical रूप में एक आध घटना बताते रहकर उन्हें ऊंचे उठने की प्रेरणा देते रहें, तो उन पर प्रभाव पड़ता है, लम्बे चौड़े lecture सुनने का धैर्य्य आज के बच्चों में नहीं। यह तेजी का युग है और अध्यापिकों को भी उनका मनोविज्ञान समझकर बात करनी चाहिए।

जो बच्चा जितना उदण्ड है, शरारती है, उसको प्रतिदिन के कामों में विशेष उत्तरदायत्वि देकर, उसे महत्त्व देकर उसकी शक्तियों का उपयोग किया जा सकता है, आलोचना से कोई नहीं सीखता। मैंने 38 वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में बिताए हैं। और अध्यापिकों और बच्चों के साथ भिन्न-भिन्न तजरबे हुए हैं, मैं वह आज इस लेख में इस विशेष दिन पर अपने पाठकों से Share करना चाहूंगी, क्योंकि हमारी इस पत्रिका के पढ़ने वालों में बहुत से अध्यापिक भी हैं।

सर्वप्रथम अध्यापिक यदि तैयारी के साथ क्लास में जाएं और हफ्ते का टाईमटेबल उसके पास बनाया हुआ हो, तो जहां अध्यापिक का Confidence बढ़ता है, वहां उसका जी लक्ष्य होता है, उसको पूरा करने के लिए वह भरसक प्रयत्न करता है।

मैं प्राय: इंगलिश वा सोशल सटडी 9-10 की क्लासों को करवाती रही हूं। कितने वर्ष पढ़ाने के बाद बहुत सी चीज़ें आपके Tips पर होती हैं, परन्तु फिर भी मैंने हमेशा पहले Lesson देखकर, सोचकर जाने का प्रयत्न किया है। इस तरह Organize करती थी कि थोड़े समय में हम अधिक काम कर लें। मेरी एक अध्यापिका दूसरे Section में English पढ़ाती थी उसने मुझसे पूछा कि Madam आप इतना काम कैसे करवा लेते हो। मैंने बताया कि कुछ काम आपको समझाना नहीं, बच्चों ने Learn करना होता है, यदि ऐसा काम आप हररोज़ देते जाओ तो वह 3-4 मिन्ट में सुना जाता है, बाकी Routine work चलता है। इंगलिश में सबसे बड़ी समस्या बच्चों को Spellings की आती है, मैंने हमेशा प्रश्न उत्तर, कोई पत्र Eassy में कठिन शब्दों को निशानी लगवाकर उनका अलग से टेस्ट ले लेना जिससे विद्यार्थियों को बेहद लाभ होता था।

बच्चों के साथ व्यवहार से आप उनका मन जीत सकते हो, अधिकतर अध्यापिक अपना हर फैसला बच्चों पर थोपते हैं, जिससे उन्हें उसे मानने में बोझ लगता है, कोई ऐसे फैसले होते हैं जिनमें बच्चों को यदि शामिल किया जाए, तो वह खुशी खुशी खुशी उससे दुगना काम कर लेते हैं। स्कूलों, कालिजों से बहुत से Functions होते हैं, जिनमें रू० इकट्ठे करने होते हैं, यदि बच्चों से ही Budget बनवाया जाए तो उन्हें पैसे देने में भी दिक्कत नहीं होती, मैं तो पैसे इकट्ठे करने के लिए भी Functions से बहुत पहले बच्चों को encourage करती थी कि वह अपनी जेब खर्च से पैसे बचाएं और फिर दें ताकि माता पिता पर अधिक बोझ न डालें।

एक बार अध्यापिकों ने परीक्षा के लिए डेटशीट बनाई, परन्तु बाहरवीं की लड़कियां मेरे पास आई कि मैडम हम थोड़ी सी Change चाहती हैं ताकि फलां विषय में पढ़ने के लिए हमें अधिक समय मिल जाए, मैंने वह Change कर दी, परन्तु अध्यापिकाएं दुखी हो गई कि लड़कियों के कहने पर ऐसी Changes नहीं करनी चाहिए, जब मैंने समझाया कि इसमें अपकी और स्कूल की कोई हानि है, तो कहने लगी नहीं, तो फिर उनकी एक बात मानकर हम उनसे चार बातें अपनी मनवा सकते हैं। सहयोग लेने के लिए सहयोग देना भी पड़ता है। मुझे बच्चों से 39 साल की नौकरी में आज्ञा पालन न करने की कोई शिकायत नहीं आई। बच्चे जब आज्ञा पालन नहीं करते तो उसमें बहुत सीमा तक हमारे तरीके गल्त होते हैं।

अध्यापिक को बहुत हमदर्द वा धैर्यवान होने की आवश्यकता है। यही कारण है कि कितने अध्यापिकों के धैर्यहीन व्यावहार से बच्चों को शारीरिक यन्त्रनाएं दी जाती है, जिससे बच्चे तो Suffer करते ही हैं, अध्यापिक भी अख़बारों की सुर्खियों में आ जाते हैं।

एक बार मैं किसी प्रिंसीपल जी की मीटिंग में गई थी। साथ मेरी वाईस प्रिंसीपल भी थी। आधी छुट्टी खत्म हो गई जब हम वापिस आए तो देखा कि बच्चों और अध्यापिकों का ग्रांऊड में जमघट लगा हुआ है। साधारणत: लड़कियों में आपस में मार पीट की शिकायत नहीं आती परन्तु अध्यापकों ने बताया कि दो लड़कियों की लड़ाई में एक ने दूसरी को पीटा। अध्यापिकों ने पीटने वाली लड़की को बहुत बुरा भला कहा। हमने जाकर सारी भीड़ को तित्तर बित्तर किया और फिर दोनों लड़कियों को बुलाया। मारने वाली लड़की से पूछा तो उसने बताया कि इस लड़की ने मेरे घर और माता पिता के विषय में यह 2 गन्दी बातें कहीं तो मुझे गुस्सा आ गया। जब दूसरी लड़की से पूछा कि सचमुच ही उसने ऐसी बातें कहीं हैं, तो वह मान गई, तो हमारे यह कहने पर कि फिर मारने वाले का तो कसूर बाद में आता है। दोनों का कसूर बराबर का है, तो दोनों लड़कियों को शान्त किया। बाद में लड़कियों ने अध्यापिक को बताया कि वह लड़की कहती थी कि यदि आज प्रिंसीपल मैडम मेरी बता न सुनती और वह भी मुझे उसी प्रकार डांटती, जैसे अध्यापिकाओं ने डांटा था तो मैंने आत्म हत्या कर लेनी थी। सुनकर मेरे पांवों तले से ज़मीन निकल गई। अध्यापिकाओं के अधैर्य्यपूर्ण वा पक्षपात पूर्ण व्यवहार से कितनी बड़ी दुर्घटना होने की संभावना थी।

यदि अध्यापिक गण चाहते हैं कि विद्यार्थी गण उनका सम्मान करें, उनकी आज्ञा पालन करें तो उन्हें अपने विषय में सम्पन्न होना, बच्चों को प्यार वा सहयोग देना, उनकी कमज़ोरी उछालने के स्थान पर उनसे हमदर्दी का व्यवहार करना सीखना होगा।

परम पू० भगवान देवात्मा की कृपा से जो समझ बूझ, जो पढ़ाने में मेहनत, अच्छे से अच्छे नतीजे निकालने, बच्चों को प्यार वा स्नेह देने का काम हुआ है। वह उनकी प्रभावों के बिना सम्भव नहीं था।

श्रद्वेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जो एक राईसजादे थे, उन्हें लड़कों को सुधारने, उन्हें बुरी आदतों से बचाने, उनको ठण्डी रातों में उठ उठ कर रजाईयों से ढकने और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करने का उदाहरण पेश किया था। यही कारण था कि उनके पुराने विद्यार्थी उनके चरणों को छूते थे, चाहे वह बड़े 2 अफसर बन गए थे।

पू० भगवान ने माननीय कनल जी जैसे अध्यापिक पैदा किए, जिन्होंने अपनी लगन, मेहनत और बच्चों के प्रति स्नेह वा हमदर्दी द्वारा उनके जीवन की काया पलट दी। ऐसी नेक बेटीयां बना दी कि जिनके रिश्ते नेक घरों में मांग कर होते थे कि यह देव समाज कालिज में पढ़ी है।

श्री धर्मवीर, श्री प्रेम बल जी जैसे पवित्र अध्यापिक पैदा किए जो नौजवान लड़कियों में रात दिन रहकर भी पाकीज़गी वा पवित्रता की मूर्ति थे। उनकी नीति शिक्षा लड़कियों के जीवन बदल देती थी।

यदि आज हमारी संस्थाओं में ऐसे अध्यापिक हों तो बच्चे क्यों सन्मान नहीं करेंगे, अवश्य करेंगे। नई पीढ़ी को सुधारने के लिए अपने आपको आर्दश रूप में स्थापित करना होगा।

सुरजीत बराड़

हम खुश कैसे रह सकते हैं?

खुशी और गम सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं, जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जीवन दुखों और कठिनाईयों से भरा हुआ है, परन्तु उन कठिनाईयों को दूर करके ही हमें सच्ची खुशी मिल सकती है। दुख से भागकर कभी सच्ची खुशी नहीं मिल सकती है।

हमें धन प्राप्ति में सुख मिलता है, परन्तु धन प्राप्त करने के लिए भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। यदि कोई विद्यार्थी डाक्टर, इंजीनियर बनने में खुशी ढूंढता है, तो उसे दिन रात एक करके मेहनत करनी पड़ती है। इस प्रकार बहुत से भौतिक सुख हैं जो हम प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु कोई भी सुख मेहनत के बिना नहीं मिलता प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए, उच्च पद प्राप्त करने के लिए मनुष्य रात दिन मेहनत करता है और मेहनत करने वालों को किसी सीमा तक वह प्राप्त भी हो जाते हैं। परन्तु क्यों समय के साथ यह खुशी कम हो जाती है? भरपूर पैसा और शोहरत रखने वाले जन भी क्यों दुखी हो जाते हैं और यहां तक कि आत्म हत्या तक कर लेते हैं जैसे मर्लिन मुनरों के पास शोहरत और पैसे की कमी नहीं थी, फिर भी उसने निराशा में घिर कर अपनी जिन्दगी खत्म कर दी। एक समय में अदाकारी के क्षितिज पर सबसे अधिक चमक दिखाने वाली मीना कुमारी ने निराशा से घिरकर अपने आपको शराब में डुबो दिया।

निराशा हमारी असन्तुष्ट इच्छाओं के कारण पैदा होती है। भौतिक, विलासपूर्ण, और अंहकार पर आधारित खुशीयां हमें अधिक समय तक खुश नहीं कर सकती। एक नशा करने वाला व्यक्ति आरम्भ में नशे से खुशी प्राप्त करता है, धीरे-धीरे नशे की मात्रा बढ़ती जाती है, जिससे वह निराशा, रोग और मौत को प्राप्त होता है।

मनोचिकित्सक सिकजेंट मीहाली ने 30 वर्ष इस प्रश्न का उत्तर ढूढ़ने में गुजारे कि मनुष्य को खुशी किस चीज़ से मिलती है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि खुशी खरीदी भी नहीं जा सकती, यह तो एकाग्रता की वह अवस्था है, जिसमें हम अपने काम में पूरी तरह खो जाते हैं।

पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफैसर सिलिगमैन का मानना है के अपने ध्यान को नकारात्मिक गतिविधियों से

हटाकर सकारात्मिक गतिविधियों में केन्द्रित रखा जाए। नकारात्मिक भावनाओं से लड़ने के लिए स्वभाविक प्रतिरोध तैयार किया जा सकता है। दर्शन शास्त्र के अनुसार सेलिगमैन को "खुशी क्रान्ति" का प्रणेता कहा जाता है। उनके अनुसार यदि आप खुश होना चाहते हैं तो लाटरी जीतना, नौकरी पाना, तनख्वाह में बढोतरी, सब भूल जाईए। खुश रहने के लिए अच्छा जीवन वा अर्थ पूर्ण जीवन होता है, वह लोग जो अपनी श्रेष्टतम शक्तियों और सद्‌गुणों को अच्छे कामों में इस्तेमाल करते हैं, दूसरों की सहायता, सेवा, धर्म आदि के द्वारा सकारात्मिक कर्म करते हैं तो वही सच्ची खुशी प्राप्त करते है।

यदि फादर डैनियम, फरलोरेंस नाईटिंगेल, मदर, टैरेसा, भक्त पूर्ण सिंह, जैसी आत्माओं को सामने लाएं, तो इन लोगों को जीवन में निराश होने का समय ही नहीं मिला। फकीरी की जिन्दगी जीकर भी वह दुनियां के सबसे खुश इन्सान थे। अपने लिए जीने वा सुख सुविधाओं में पड़कर निक्कमें पड़े रहने से ही निराशा घेरती है। अपने से बाहर निकल कर देखो, किसी गरीब की सहायता कर दो, किसी गरीब अनपढ़ को पढ़ा दो। किसी जरूरत मन्द की कठिनाई को दूर कर दो तो खुशी आपके पैर चूमेगी। हमारा नीच जीवन ही निराशा पैदा करता है। असन्तुष्ट इच्छाएं, अपने सुखों पर चोट लगना, उचित दुख को भी अपने वा दूसरों के भले के लिए ग्रहण न कर सकना निराशा का कारण हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने अपनी आद्वितीय शिक्षा में यह साफ कर दिया है कि हमारा नीच जीवन हमारे लिए दुख और निराशा पैदा करता है। उच्च भाव ही सच्ची खुशी के स्त्रोत हैं। बगैर उच्च वा सात्विक भावनाओं के कोई मनुष्य कितने ही संसारिक पद वा पदार्थ और उपलब्धियां रखता हो, कदाचित सच्ची खुशी का मुंह नहीं देख सकता।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Post